Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540

# सम्राट अशोक का बौद्ध धर्म (धम्म्) व उसके द्वारा निर्मित शिलालेख

**Smt. Geeta***

Research Scholar, Department of Indian History & Sanskriti, Dev Sanskriti University, Gayatrikunj, Shantikunj, Haridwar, Uttarakhand

***सारांश:-*** *प्राचीन भारत के राजवंशों में मौर्य -साम्राज्य का प्रतापी सम्राट अशोक बौद्ध धर्म का सबसे बड़ा अनुयायी एवं आश्रयदाता रहा है। उसके 13वें अभिलेख से ज्ञात होता है कि कलिंग विजय की रक्तिम -क्रीड़ा ने उसकी राज्यविजयलिप्सा को धर्म विजय के रूप में परिवर्तित कर दिया था। बौद्ध धर्म के स्पर्श से ही वह सम्राट से ही प्रियदर्शी बन गया था। उसने बौद्धधर्म के प्रचारार्थ अपने राज्य में धर्म प्रचारक भेजे थे। स्थान-स्थान पर तथागत की कल्याणमयी वाणी को उत्कीर्णित कराके अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाया उसने वृक्ष लगवाये, कूप खुदवाये और चिकित्सालय बनवायें। निष्कर्ष यह रहा कि अशोक ने अपना सारा जीवन और साम्राज्य की सारी शक्ति उसने बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार एवं उसके उच्चादर्शो को चमकाने में लगा दी। प्रस्तुत शौधपत्र में सम्राट अशोक की महानता एवं उसके कार्यों द्वारा स्थापित शिलालेख एवं बौद्ध धर्म का किस प्रकार प्रचार-प्रसार किया है लोकहितकारी संदेश को अशोक ने धरती में फैला देने का भी महान कार्य किया। मनुष्य - मनुष्य के कानों तक इस शुभ -संवाद को पहुचा सकने में वह जो कुछ कर सकता था उसने किया।*

----------X----------

## भूमिका:-

सम्राट अशोक के उत्तरकालीन राजवंशो ने भी इस प्रचार कार्य मे भरपूर योगदान किया। कुशाण राज्य के संस्थापक कनिश्क ने उसके बाद उदारनीतिक गुप्त राजाओं ने अशोक द्वारा परवर्तित इस धर्म प्रचार कार्य को मध्य एशिया, चीन ,जापान ,तिब्बत, वर्मा, थाइलैण्ड़ और कम्बोड़िया आदि दूर देशों में प्रचारित-प्रसारित करवाया। इन देशों में बौद्ध धर्म की जो अटूट परम्परा सहस्राब्दियां बाद आज भी बनी हुई है। यह सब पहुचाने वाले भारत के यही राजवंश थे। (संस्कृत साहित्य का इतिहास "वाचस्पति गैरोला"। प्रकाशन -चैखम्बा विद्यावन पृ0-313-314)।

डॉ. स्मिथ [1]" अशोक का राज्यभिषेक में चार वर्ष[2]" (269ई0पू0तक) का विलम्ब हुआ। यह सम्भव हो सकता है कि अशोक का उत्तराधिकार विवादों में रहा हो, उसके लिए खूब खून-खराबा रहा हो क्योंकि उसका बड़ा भाई सुमीस उसका प्रतिद्वंदी था किन्तु उत्तराधिकार संबधी कोई प्रमाण नहीं मिलता। "डॉ. जायसवाल [3]"ने अशोक के राज्यसंबधी बिलंब के बारे में स्पष्ट किया है कि " ऐसा लगता है कि मौर्यकाल में राज्यभिशेक के लिए युवराज का 25 वर्ष होना एक शर्त थी। [4]" (प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास "डॉ. हेमचन्द्र राय चैधरी"। पृ0-222)।

ईसा से पहले की पांच शताब्दियों में भारतीय इतिहास में जिन व्यक्तियों ने देश की गतिविधियों व परिवर्तन की बहुत सी धाराएँ सबसे अधिक प्रवाहित करती हैं उसमें अशोक का एक विषेश स्थान है । अशोक भारतीय इतिहास में ही नहीं वरन विश्व के इतिहास में एक आसाधारण और महान सम्राट के रूप में विख्यात है ,वह मौर्यवंश का तीसरा सम्राट था। वह अपने पिता बिन्दुसार की मृत्यु के बाद ही मगध के सिंहासन पर आसीन हुआ था। अपने उच्च राजनैतिक आदर्शों व सिद्धांतों, धर्म-विजय, नैतिकता व दयालुता , सहिश्णुता , उदारता व प्रवाहित-चिंतन, काल एवं संस्कृति की सेवा जैसे कार्यो से भारतीय इतिहास की वह निश्चय ही अतुलनीय विभूति है। (प्राचीन भारत का इतिहास "शिव कुमार गुप्त"। प्रकाशक - पंचशील प्रकाशक, फिल्म कॉलोनी, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302003। पृ0212)।

www.ignited.in

## अशोक का धर्म -प्रचारः-

अशोक के अभिलेखों में 'धर्म' शब्द का प्रयोग अनेक जगहों पर होता है। अशोक धर्म शब्द का तो नाम लेता लेकिन विशेशताएं बताता है।

1. अनुकरणीय जिसका मनुष्य को अनुसरण करना चाहिए ।

2. वर्जनीय (जिससे मनुष्य को बचना चाहिए) जो अनुकरणीय है। वह धर्म है और जो वर्जनीय है यह अर्धम है, आसिनव है, पाप है।

राज्यारोहण के नवें वर्ष उसने कलिंग के शक्तिशाली राज्य पर आक्रमण किया। भीषण संग्राम और भयानक नर-संहार के बाद उसे विजय प्राप्त हुई। इस युद्ध में लगभग एक लाख लोग मारे गये, डेढ़ लाख बन्दी बनाये गये और सहस्रों घायल हुए। घायलों की चीख -पुकार व विधवाओं के विलाप और अनाथ बालकों के करुण -क्रन्दन का उस पर भारी प्रभाव पड़ा। उसका हृदय करूणा से ओत-प्रोत हो गया उसने इस भीषण रक्तपात और भारी जन-संहार का प्रमुख कारण अपने आपको ही माना और भविष्य में युद्ध न करने का दृढ़ निश्चय किया। अशोक के बौद्ध होने का प्रत्यक्ष प्रमाण उसके चतुर्दश शिलालेख में से तेरहवें शिलालेख में मिलता है। अशोक ने बौद्धमत के व्यवहारिक पक्ष के समर्थक सिद्धांतों का प्रचार प्रारंभ किया उसने जिस धर्म का प्रचार किया वह अशोक का धर्म का प्रचार किया वह अशोक का धम्म कहा जाता है।(प्राचीन भारत का इतिहास "डॉ. विपिन सिन्हा" ज्ञानदा प्रकाशन सी. एण्ड़ डी., नई दिल्ली। पृ.-134-335)।

## धर्म यात्राओं का प्रारम्भः-

अशोक ने बौद्ध धर्म प्रचारार्थ यात्राओं से प्रारम्भ किया। वह अपने अभिषेक के दसवें वर्ष बौद्धगया की यात्रा पर गया यह उसकी पहली धर्म यात्रा थी। अपने चैदहवें वर्ष में नेपाल की तराई में स्थित निग्लीवा (निगाली सागर) में जाकर उसने कनकमुनी बुद्ध के स्तूप के आकार को द्विगुणित करवाया। बीसवें वर्ष वह बुद्ध के जन्मस्थल लुम्बिनी ग्राम गया और वहां शिलान्यास स्थापित करवाया तथा पूजा की। वहा का कर घटाकर 1/8 कर दिया। अशोक के इन कार्यों का जनता के ऊपर बड़ा प्रभाव पड़ा और वह बौद्ध धर्म की ओर आक्रष्ट हुई।

## राजकीय पदाधिकारियों की नियुक्तिः-

अशोक का साम्राज्य बहुत बड़ा था। अशोक ने अपने साम्राज्य के उच्चपदाधिकारियों को भी धर्म प्रचार के काम में लगा दिया। स्तम्भ -लेख तीन एवं सात से ज्ञात होता है कि उसने व्युष्ट, रज्जुक, प्रादेशिक तथा युक्त नामक पदाधिकारियों को जनता के बीच जाकर धर्म प्रचार एवं उपदेश करने का आदेश दिया ये अधिकारी प्रति पांचवे वर्ष अपने-अपने क्षेत्रों के दौरे पर जाया करते थे तथा सामान्य प्रशासकीय कार्यों के साथ जनता में धर्म का प्रचार किया करते थे।

## धर्मश्रावन तथा धर्मोपदेश की व्यवस्थाः-

धर्म प्रचार के उपदेश से अशोक ने अपने साम्राज्य में धर्मश्रावन (धर्म सावन) तथा धर्मोपदेश (धम्मानुसथि) की व्यवस्था करवायी। उसके साम्राज्य के विभिन्न पदाधिकारी जगह-जगह घूमकर धर्म के बारें में लोगों को बताया करते थे तथा राजा की ओर से जो धर्म-संबधी घोषणायें की जाती थी।

## धर्ममहामात्रों की नियुक्तिः-

अपने अभिषेक के तेरहवें वर्ष में बौद्धधर्म के प्रचार के लिए अशोक ने पदाधिकारियों का एक नवीन वर्ग बनाया जिसे धर्म-महामात्र (धम्ममहामात्त) कहा गया है। धर्ममहामात्र राजपरिवार के सदस्यों से धर्म के लिए धनाधि दान में प्राप्त करते थे और राजा द्वारा जो धन दान में दिया जाता था उसकी समुचित व्यवस्था करके उसे धर्म प्रचार के काम में नियोजित किया करते थे। अशोक ने 13वें वर्ष धर्ममहामात्र नियुक्त किए और इनका कार्य विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों के बीच द्वेष द्वेष-भाव को समाप्त कर धर्म की एकता पर बल देना था। इनका कर्तब्य धर्म की रक्षा, धर्म की वृद्धि (धम्माधिथानाये, धम्मबढ़िया) करना था। धर्ममहामात्रों के प्रयास से धर्म की अधिक वृद्धि हुई।

## लेकोपारिता का कार्यः-

अशोक ने मानव व पशु जाति के कल्याण के लिए अनेक कार्य किए। सर्वप्रथम पशु-पक्षियों की हत्या पर रोक लगा दी। अपने व विदेशी राज्यों में भी मनुष्यों व पशुओं के लिए चिकित्सा की अलग-अलग व्यवस्था करवाई। कुएं खुदवाएं, विश्राम गृह बनवाये। बौद्धग्रंथ संयुक्तनिकाय में फलदार वृक्ष लगवाने तथा पुल बंधवाने, प्याऊ चलवाने आदि महान पुण्य का कार्य बताया गया है। जिसके बल पर मनुश्य स्वर्गलोक की प्राप्ति करता है। अतः अशोक की प्रेरणा तथा कोशिश का

www.ignited.in

प्रतिफल यही रहा कि इन सभी कार्यों का जनमानस पर अच्छा प्रभाव पड़ा और वे बौद्ध धर्म की ओर आकर्षित हुए।

## विदेशों में धर्म प्रचारकों को भेजनाः-

अशोक ने बौद्धधर्म के प्रचारार्थ विदेशों में भी भेजे। 13वें शिलालेख में वह अपने दूत के नाम गिनवाता है। अशोक के धर्म प्रचार की ख्याति को सुनकर कुछ यूनानी बौद्ध बन गये और पश्चिम एशिया में बौद्ध धर्म का व्यापक प्रचार हुआ।

**सिंहली अनुश्रुतियों के अनुसारः**- दीपवंश एवं महावंश के अनुसार अशोक के राज्यकाल में पाटलिपुत्र में बौद्ध धर्म की तृतीय संगीति हुई, इसकी अध्यक्षता मोग्गलिपुत्त तिस्स नामक बौद्ध भिक्षु ने की थी। इस संगीति की समाप्ति के बाद विभिन्न देशों में बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु भिक्षु भेजे गये जिनके नाम महावंश में इस प्रकार प्राप्त होते हैं-

| धर्म प्रचारक | देश |
|---|---|
| 1- मज्झन्तिक | कश्मीर तथा गन्धार |
| 2- महारक्षित | यवन देश |
| 3- मज्झिम | हिमालय देश |
| 4- धर्मरक्षित | अपरान्तक |
| 5- महाधर्मरक्षित | महाराष्ट्र |
| 6- महादेव | महिष्मण्डल (मैसूर तथा मान्धाता) |
| 7- रक्षित | बनवासी (उत्तरी कन्नड़) |
| 8- सोन तथा उत्तर | सुवर्णभूमि |
| 9- महेन्द्र तथा संघमित्रा | लंका |

लंका में बौद्ध धर्म प्रचारकों को काफी सफलता प्राप्त हुई। लंका में अशोक ने अपने पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को भेजा था। महेन्द्र ने वहा के शासक तिस्स को बौद्ध धर्म में दीक्षित कर लिया तथा तिस्स ने सम्भवतः इसे राजधर्म बना लिया और स्वयं अशोक ने इस धर्म को राजधर्म घोषित कर दिया था तथा स्वयं अशोक के अनुकरण पर उसने 'देवानाम्पिय' की उपाधि ग्रहण कर ली। अशोक ने स्वदेश व विदेशों मे बौद्धधर्म का प्रचार-प्रचार किया। इस प्रकार बौद्धधर्म ने भारत की सीमाओं का अतिक्रमण कर एशिया के विभिन्न भागों में फैल गया और यह अन्तरास्ट्रीय धर्म बन गया। बिना किसी राजनीतिक और आर्थिक स्वार्थ ने धर्म प्रचार का यह पहला उदाहरण था और इतिहास में दूसरा उदाहरण उपस्थित नहीं है। (के. सी. श्रीवास्तव "प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति"। प्रकाशक यूनाइटेड बुक डिपो 21, यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद-21002। पृ.- 231-232)'

भारतीय इतिहास में अशोक के अभिलेखों का महत्पूर्ण स्थान है। अशोक के ये लेख पत्थरों के स्तम्भों और शिलाओं पर हिमालय से मैसूर तक और उड़ीसा से काठियावाड़ तक खुदे हुए हैं। ये पाली भाषा में हैं। मोटे तौर पर इन्हें तीन भागों में विभाजित किया गया है-

1- शिलालेख

2- स्तम्भ लेख

3- गुहा लेख

**(क) शिलालेखः-**

**(1) लघु शिलालेख -** इनकी तिथि 258 या 257ई. पूर्व. है। यह शिलालेख दो प्रकार के हैं । नं.1 तथा नं.2 के शिलालेख मैसूर के चिन्तल जिले के सिद्पुर जातिंग रामेश्वरी और ब्रहमगिरि नामक स्थानों पर पाये गये हैं। नं.1 शिलालेख उपरोक्त स्थान के अलावा जबलपुर जिले के रूपनाथ नामक स्थान पर और आरा जिले में सहसराम नामक स्थान और निजाम राज्य मास्की, नविमय, पल्का, गुण्ड तथा इरामुदी स्थानों पर मिलते हैं। इन शिलालेखों के द्वारा अशोक व्यक्तिगत इतिहास तथा उसके धर्म के संबध में जानकारी मिलती है।

**(2) चतुर्दर्शी शिलालेख-** ये शिलेख निम्न स्थानों पर प्राप्त हुए हैं-

शहबाज गढ़ी (पेशावर जिला)

मनसेहरा (हजारा जिला)

कालसी (देहरादून जिला)

गिरनार (जूनागढ़ के समीप)

सोपारा (थाना जिला)

धौली (पुरी जिला)

जौगढ़ (गंजाम जिला)

इरागुदी (करनाल जिला)

इन शिलालेखों की तिथि 257 तथा 256 ई0 पूर्व है। इनके द्वारा अशोक के राजनीतिक एवं नैतिक विचारों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। इनमें 13वा. शिलालेख सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथा लंबा है। कलिंग युद्ध के उपरान्त अशोक का

www.ignited.in

जो हृदय परिवर्तन हुआ इसकी जानकारी इसी शिलालेख से प्राप्त होती है।.

(3) **दो कलिंग शिलालेख** - धौली व जोगढ़ नामक स्थानों पर प्राप्त इन शिलालेखों की तिथि 256ई. पूर्व है। इन शिलालेखों में उन सिद्धांतों की चर्चा है जिसमें कलिंग एवं अन्य सीमांत प्रदेशों के लोगों के साथ जो व्यवहार किया गया था।

(4) **भाब्रू शिलालेख** - यह शिलालेख जयपुर के वैराट के समीप था। डॉ. स्मिथ ने इसकी तिथि 258 ई. पू. से 257 ई.पू. बताई है। इस शिलालेख में बौद्धधर्म में ऐसे सात उद्धरण दिए गए हैं जो अशोक को बहुत अधिक प्रिय थे। और वह चाहता था कि प्रजा उनकों पढ़कर उनके अनुसार आचरण करे।

**(ख) स्तम्भ लेख:-**

(1) **सप्त स्तम्भ लेख**- यह स्तम्भ 6 स्थानों पर प्राप्त हुए हैं। दिल्ली में दो स्तम्भ पाये गये हैं जो निम्न स्थानो पर पाये गये हैं।

टोपरा (दिल्ली)

मेरठ (दिल्ली)

कौशाम्बी (इलाहाबाद)

रायपुरवार (जिला चम्पारण)

लौरिया (नन्दगढ़) और लौरिया अरराज ।

(2) **दो तराई स्तम्भ लेख** - यह लेख नेपाल की तराई में रुम्मिनदेई तथा निग्लिव ग्राम में विद्यमान है। इन लेखों में बौद्धधर्म के तीर्थ स्थानों तथा तीर्थ यात्राओं का वर्णन मिलता है। इनकी स्थापना 246 ईसा पूर्व में हुई थी।

(3) **चारा गोरा स्तम्भ लेख**- इनमें दो रांची व सारनाथ की लाटों पर खुदे हुए हैं। और दो प्रयोग में हैं। यह लेख 242ई. पू. के बीच के हैं। इन स्तम्भ लेखों को बौद्ध धर्म में उत्पन्न मतभेदों को दूर करने के लिए लिखवाया गया है।

(ग) **गुहा लेख:-** इनकी संख्या तीन है। यह गया के निकट बराबर की पहाड़ी पर है। इन शिलालेखों में सम्राट द्वारा आजीविका को दिए गए दान का उल्लेख है। उसके द्वारा अशोक की सहिष्णुता की नीति का पता चलता है। यह लेख 257ई. पूर्व तथा 250 ई. पूर्व के हैं।

## अभिलेखों की भाषा व लिपि:-

अशोक के सभी अभिलेखों की भाषा प्राकृत है तथा उसमें लिखनें के लिए ब्रहमी लिपि का प्रयोग किया गया है। केवल मानसेहरा और शाहबाजगढ़ी के अभिलेखों की लिपि खरोष्ठी है। ब्रहमी लिपि बाईं से दाईं ओर और खरोष्ठी दाईं ओर बाईं ओर को लिखी जाती है।

## अभिलेखों का महत्व-

ऐतिहासिक द्रष्टि से अशोक के अभिलेखों से पता चलता है कि अशोक के राज्य में कौन-कौन से प्रान्त सम्मिलित थे, उनसे यह ज्ञात होता है कि सूदूर दक्षिण के राज्यों को छोड़कर सम्पूर्ण भारत उसके साम्राज्य में सम्मिलत था। अशोक ने सम्राट बनने के बाद अपने पूर्वजों की भांति साम्राज्यवादी नीति का अनुसरण किया और साथ ही कुछ देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबध कायम करने की इस नीति का भी पालन किया। और यवन राज्यों में अपने राजदूत भेजे। इसका प्रमुख कारण उसकी नीति राज्य विस्तार की थी। प्राचीन राजाओं की भांति उसका भी राजनीतिक आदर्ष भारत में दिग्विजय का था। अतः भारत के जो प्रांत अभी मौर्य साम्राज्य के अन्तर्गत नहीं थे उन पर आक्रमण का संकल्प था। इस तरह अशोक ने पहले कश्मीर पर आक्रमण किया और विजय प्राप्त की। इस तरह उसने अपने साम्राज्य में कश्मीर को मिला लिया। कश्मीर में प्राचीन ऐतिहासिक ग्रंथ (राजतंगिणी) में अशोक को मौर्य देश का प्रथम सम्राट व्यक्त किया है।

अशोक का विदेशों से संबंध- इन अभिलेखों के द्वारा ही ज्ञात होता है कि अशोक ने सीरिया, एपिरस, मिश्र और सरीन आदि देशों को अपने राजदूत भेजे थे और इन देशों में मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किए थे।

अशोक की शासन - व्यवस्था- अभिलेख के द्वारा हमें अशोक की शासन-व्यवस्था का पता चलता है। उसकी शासन संबंधी राजाज्ञाओं की चर्चा अभिलेखों में हुई हैं। अपनी प्ररजा के लिए अशोक ने जो कुछ दिया उसका ज्ञान भी हमें अभिलेखों से प्राप्त होता है।

www.ignited.in

## बौद्ध धर्म का अग्रदूत:-

भारतीय बौद्ध- साहित्य भी अशोक को बौद्ध बताते हैं। विदेशी बौद्धसाहित्य लंका, ब्रह्मा, स्याम, तिब्बत, चीन, नेपाल, कोरिया, जापान आदि ने भी अशोक को बौद्ध ही कहा है। विदेशी यात्री भी फाह्यान, ध्वानच्वांग, इत्सिंग आदि ने भी अशोक को बौद्ध ही माना तथा इत्सिंग ने तो भिक्षु रुप में एक मूर्ति देखने की चर्चा की। राजतंगिणी ग्रंथ भी अशोक को महात्मा बुद्ध का अनुयायी बताता है। यह ब्राह्मण ग्रंथ होने के नाते इसका साक्ष प्रमाणिक माना जाता है। अतः अशोक का व्यक्तिगत धर्म बौद्ध धर्म ही था। डॉ. स्मिथ के अनुसार – "यदि अशोक बौद्ध न होता तो वह अपने विशाल साम्राज्य पर 40 बर्ष तक सफलतापूर्वक शासन न सका होता और अपना नाम ऐसा न छोड़ गया होता जिसे लोग दो हजार वर्षों के उपरान्त भी नहीं भूले हैं। (भारत का इतिहास "डॉ. दया प्रकाश रस्तौगी" प्रकाशक-साधना प्रकाशन रस्तौगी स्ट्रीट, सुभाष बाजार, मेरठ-2550002)।

## निष्कर्ष

अशोक केवल भारतीय इतिहास में ही नहीं बल्कि विश्व इतिहास के महानतम सम्राटों में से एक हैं। वह एक महान विजेता, कुशल प्रशासक एवं सफल धार्मिक नेता था। अशोक ने धर्म प्रचार में धम्म महामात्रों, पुरुषों, युक्तों, राजुकों तथा प्रदिशिकों सदृश अधिकारियों की सहायता ली। और उसके बौद्धधर्म को उपासक स्वरूप् ग्रहण किया था। और उसके प्रचार-प्रसार में अपने विशाल साम्राज्य के सभी साधनों को लगा दिया था। धम्म महामात्र नामक अधिकारियों की नियुक्ति सबसे पहले अशोक ने ही की थी। पाटिलिपुत्र की तृतीय बौद्ध संगीति के सुखद परिणाम फलस्वरूप अशोक ने भारत भूमि से बाहर बौद्धर्ध के प्रचार -प्रसार का निष्चय कर विदेशों में प्रचारक मंडली को भेजने की व्यवस्था की। बौद्धग्रंथों से पता चलता है कि इस प्रकार के प्रचारक गंधार कश्मीर, हिमवत प्रदेश, अपरांत पश्चिम में वाराणसी, मैसूर कर्नाटक सुदूर दक्षिण में श्रीलंका तथा सुवर्ण भूमि भेजे गये थे। श्रीलंका में प्रेषित प्रचारक मंडल का विशद वर्णन मिलता है। महावंश के अनुसार स्थवित मज्झन्तिक को कश्मीर व गंधार, कर्नाटक का उत्तरी भाग, उत्तरी संबल तथा भद्रशाल, इट्ठीय स्थविरों को श्रीलंका तथा महारक्षित को यवन भेजा, दीपवंश में मज्झिम के साथ कस्सपोततए दुं दुभिसार सहदेव तथा अलकदेव को भेजा। सिंहली इतिवृत्तों में श्रीलंका में प्रेशित प्रचार मंडल को नेतृत्व मेहन्द्र तथा संघमित्रा ने किया। इस प्रकार अशोक अपने अदम्य उत्साह से एक स्थानीय धर्म को विश्वव्यापी धर्म बना दिया। इस धर्म द्वारा अशोक ने विश्व-बन्धुत्व एवं लोक-कल्याण का अपना संदेश दूर-दूर देशों तक फैलाया। अशोक ने ही अन्तराष्ट्रीय स्तर पर 'जीओ और जीने दो' तथा राजनीतिक हिंसा धर्म विरूद्ध है का धर्म पाठ पढ़ाया। स्वतंत्र भारत से सारनाथ स्तम्भ के सिंह-शीर्श को अपने राजचिह्न के रूप ग्रहणकर मानवता के इस महान पुजारी के प्रति अपनी सच्ची श्रद्धांजली अर्पित की है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास''वाचस्पति गैरोला''। प्रकाशन - चैखम्बा विद्याभवन। पृ0-313-314)।
2. प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास "डॉ. हेमचन्द्र राय चैधरी''। पृ0-222)।
3. प्राचीन भारत का इतिहास "शिव कुमार गुप्त''। प्रकाशक - पंचशील प्रकाशक, फिल्म कॉलोनी, चैड़ा रास्ता, जयपुर-302003। पृ0212)।
4. प्राचीन भारत का इतिहास डॉ. विपिन सिन्हा "ज्ञानदा प्रकाशन सी. एण्ड़ डी., नई दिल्ली। पृ0-134-335)।
5. के. सी. श्रीवास्तव "प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति''। प्रकाशक यूनाइटेड बुक डिपो 21, यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद-21002। पृ0- 231-232)'
6. भारत का इतिहास "डॉ. दया प्रकाश रस्तौगी'' प्रकाशक-साधना प्रकाशन रस्तौगी स्ट्रीट, सुभाश बाजार, मेरठ-2550002)।

**Corresponding Author**

**Smt. Geeta***

Research Scholar, Department of Indian History & Sanskriti, Dev Sanskriti University, Gayatrikunj, Shantikunj, Haridwar, Uttarakhand

smt.geeta786@gmail.com

www.ignited.in